हमारा शहर उस बरस में साम्प्रदायिकता

डॉ.संतोष रोडे
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
प्रा. रामकृष्ण मोरे महाविद्यालय आकुर्डी ,पुणे

समकालीन महिला रचनाकरों में गीतांजलि श्री पुरे विश्व में प्रसिद्धी प्राप्त की हैं वह हिंदी की जानी मानी रचनाकार हैं गीतांजलि श्री हिंदी की पहली ऐसी लेखिका हैं जिन्हें रेत समाधी के लिए मैंन बुकर अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार से समानित किया गया हैं | उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जनपद में जन्मी गीतांजलि श्री की प्रारम्भिक शिक्षा उत्तर प्रदेश के विभिन्न शहरों में हुई उन्होंने स्नातक दिल्ली के लेडी श्रीराम कॉलेज से पूरी की और जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय से इतिहास में एम.ए .की पढाई की | अनुसंधान के बाद कुछ दिनों तक दिल्ली के जामिया मिलिया विश्वविद्यालय अध्यापन कार्य किया | उनके रचना संसार में पांच उपन्यास हैं माई ,हमारा शहर उस बरस ,तिरोहित, खाली जगह, रेत समाधी आदि उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं और पांच कहानी संग्रह हैं अनुगूँज ,वैराग्य ,मार्च ,माँ और साकूरा,यहाँ हाथी रहते थे , और प्रतिनिधि कहानियाँ प्रकाशित हैं |

अपने लेखन में वैचारिक रूप से स्पष्ट और प्रौढ़ अभिव्यक्ति के जरिए उन्होंने अपना हिंदी साहित्य में विशिष्ट स्थान बनाया हैं | हमारा शहर उस बरस गीतांजलि श्री का रचना विकास की दृष्टि से यह दूसरा उपन्यास हैं जो साम्प्रदायिक समस्या को मुख्य रूप से उद्घाटित करता हैं उपन्यास में उस बरस का संबध हैं जब 6 दिसम्बर 1992 में बाबरी मस्जिद का ध्वंस हुआ था |हमारा शहर कोई भी हो सकता हैं | उपन्यास में साम्प्रदायिकता को लेकर लम्बीं बहस शुरू होती हैं लेकिन किसी निष्कर्ष तक पहुचते नहीं सिर्फ चर्चा विमर्श करते है| यह उपन्यास राजनितिक मसले को लेकर लिखा गया महत्वाकांक्षी उपन्यास हैं उपन्यास में सबसे महत्वपूर्ण उन बुद्धिजीवियों का चरित्र हैं ,जिनके मन में पेंचे तथा गांठे हैं लेखिका ने उन्हें बड़े अछे तरीके से खोला हैं | समाज में ऐसें भी लोग हैं जो साम्प्रदायिक दंगे के यथार्थ को समझते हैं ,उन पर बहस करते हैं मगर जब भी साम्प्रदायिक दंगे फसाद होते है तब चाहे अनचाहे वो भी हिन्दू मुसलमान होते हैं

हमारा शहर उस बरस में बहुत कम पत्र हैं जिनमे शरद श्रुति हनीफ एवं ददु हैं पूरा उपन्यास दो स्तरों पर चलता हैं एक तो विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग में शरद और हनीफ अध्यापन करते है दूसरी ओर जहा तीनों अपनी तरह से वर्तमान की व्याख्या करते हैं | श्रुति हनीफ की पत्नी है जो लेखिका हैं तीनों चाहते है की शहर में हो रहे दंगो पर अख़बार में लिखे समाज को दंगो की असलियत का पता चले दंगो पर लिखना कठिन काम हैं साथ ही साथ जोखिम भरा भी | लिखा कैसे जाये ,उन्हें लगता है कि लिखना बेईमानी हैं श्रुति के मन में द्वन्द निर्माण होता हैं श्रुति कहती हैं " सब रटी रटाई बातें हैं जिनको लिखने से कुछ नहीं होगा क्योंकि वह हर तरफ नकारी जा रही हैं सरकारी नरो की तरह बेमतलब हो चुकी हैं."[1] उपन्यास में मठ की राजनिति का भी चित्रण दिखाई देता हैं साथ ही अद्भुत चमत्कार का भी चित्रण गीतांजलि श्री ने बड़ा सटीक चित्रण किया हैं | "देवी के मंदिर में एक पुजारी पुजा कर रहा था अचानक अक सांप निकला उसे देख कर पुजारी ने नागदेवता समजकर प्रणाम किया तभी देवी प्रगट हुई और बोली मैं मैं जो कहती हूँ उसे ध्यान से सुनो :ये सांप वो हैं जो थोड़े थोड़े दिनों के बाद पृथ्वी पर जन्म लेते हैं ,और लोगो का धर्मनाश करते हैं ,इनका नाश करो ,जो आदमी ऐसा करेगा मेरे नाम के दो हजार पर्चे बाँटेगा उसकी मनोकामना चौबीस दिनों में पुरी होगी और जो व्यक्ति आज – कल करेगा चौबीस दिन बिताएगा उसका बहुत बड़ा नुकसान होगा"[2] गीतांजलि श्री ने बाबरी मस्जिद को तोड़े जाने के प्रसंग को इस प्रकार लिया हैं " अभी तक मठ के मंदिर की धूम थी ,अब एक नयी उमंग जागी है,दूर –दूर से भक्त आ रहे है और शहर के किनारे पड़े खंडहर नुमा मस्जिद जिस पर कहते हैं कि वानर सेना ने मठ का ध्वज फहराकर मंदिर बना दिया हैं मंदिर में मथा टेकने जाते ...हम जा चुके ,उस मस्जिद नहीं मंदिर असल में महकवाले खंडहर में"[3] भारत देश बहुधर्मीय देश ,अलग – अलग धर्म के लोग रहते है उपन्यास में गलत राजनिति का उदा. इस प्रकार देख सकते है | " भारत को महान बनाना हैं मस्जिद तोड़ गिराना है"[4]

उपन्यास में विश्वविद्यालय में होनेवाली राजनिति तथा गुटबाजी का भी चित्रण हैं शरद हनीफ विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग में प्रोफेसर ,प्रोफेसर नंदन के बाद क्रम से प्रोफेसर हनीफ का नंबर आता हैं लेकिन वह मुसलमान होने के कारण विश्वविद्यालय से हटाने का असफल प्रयास किया जाता ,शरद और हनीफ बेहद ईमानदार प्रोफेसर हैं , दोनों के ढेर सारे पेपर प्रकाशित है | दोनों पूरी लगन से पढ़ाते हैं | वे इतिहास के प्रोफेसर हैं इसीलिए धर्मनिरपेक्ष है | छात्र संघ को इनकी धर्मनिरपेक्ष बाते पसंद नहीं है वे शरद के खिलाफ तो केवल पत्थर ही फेंक सकते थे | क्योकि वह धर्मनिरपेक्ष हैं ,लेकिन हनीफ के विरुद्ध तो कुछ भी हो सकता है,छात्र संघ प्रस्ताव पारित करता है कि " हनीफ को यूनिवर्सिटी से डिसमिस किया जाए"[5] शरद इस प्रस्ताव का विरोध करता हैं केकिन सुखद प्रसंग यह हैं कि स्वयं कुलपति भी इस प्रस्ताव की निंदा करते हैं | कुलपति ने कहा " स्टूडेंट यूनियन का काम न किसी की नियुक्ति से है न किसी की बर्खास्तगी से हनीफ देश विदेश में प्रसिद्ध हैं यूनिवर्सिटी को उन पर नाज है स्टूडेंट यूनियन उलटी सीधी राय देकर जो दुस्साहस दिखाया वह निंदनीय "[6] उपन्यास का कथानक सहज और सरल हैं उसमें कोई भी और किसी भी प्रकार की खींचतान नहीं हैं पूरा उपन्यास वर्तमान पर चलता हैं पूरा शहर दंगो से परिचित था | शहरों में दंगों की खबर सुनने के बाद उनके मन में कोई भी और किसी प्रकार की भावना दिखाई नहीं देती वे दंगो को नजदीकी से देखते हैं उपन्यास में राजनिति तथा वर्तमान स्थिति पर भी प्रकाश डाला गया ,तथा हिन्दू धर्म में प्रचलित रूढ़िपरम्परा का चित्रण किया गया ,इसीलिए यह उपन्यास भारतीय सामाजिक तथा राजनीतिक स्थिति को यथार्थ रूप में प्रकट करनेवाला उपन्यास हैं |

****

संदर्भ :

हमारा शहर उस बरस – गीतांजलि श्री पृ. क्र. 7
वहीं – 257
वही – 97
वहीं- 117
वहीं – 272
वहीं - 272
वहीं - 274